अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





आर्थिक संरचना
Economic Structure

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

आर्थिक संरचना Economic Structure

अध्याय शीर्षक	आर्थिक संरचना
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Economic Structure**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

आर्थिक संरचना Economic Structure

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – आर्थिक संरचना का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड की पहचान

बुन्देलखण्ड कभी भी राजनीतिक दृष्टि से एक नहीं रहा। समय–समय पर छोटी–बड़ी 42 रियासतें बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आते थे। बुन्देलखण्ड हमेशा की तरह आवागमन के साधनों से रहित था, इसलिए यहां पर परिवर्तित और क्षेत्रीय सन्स्कृतियों का ही विकास हुआ, जो क्षेत्र के आधार पर था। आवागमन का साधन न होने पर यहां आना अत्यंत दुष्कर रहा है।

आर्थिक असमानता सन्चार व्यवस्था का ना होना, आवागमन और सड़कों का ना होना, विषम मौसम की परिस्थितियां, यह सब चीजें मिलकर यहां किसी का भी आना दुष्कर कर देता है। अतः सन्चार व्यवस्था ना होने पर इस छोटे–छोटे इलाके में कूप मन्डूक की तरह विकास होता रहा। प्राकृतिक सन्रचना के आधार पर नदियां ही इसका विभाजन करती रही।

औरंगजेब के शब्दों के अनुसार

जमीन हमवार नहीं, दरख फलदार नहीं।
मर्द वफादार नहीं, औरत बिन यार नहीं।।

बुन्देलखण्ड की स्त्री और पुरुषों के बारे में बहुत अच्छा विचार औरंगजेब के मन में भी नहीं था।

यहां के लोगों की धारणा व धारणाओं में विषम परिस्थितियों का बहुत उल्लेख मिलता है क्योंकि सन्चार के कोई विशेष साधन नहीं है अतः जो कुछ भी प्राकृतिक रूप में यहां मिलता है, उसी पर गुजर बसर होती थी। इस क्षेत्र में बेर और महुआ की प्रचुर उपलब्धता थी और है, और इसी से लोगों का भरण पोषण व जिन्दगी गुजर जाती थी।

गुड़ाना अर्थात गोंडवाना की कहावत व जनश्रुति के अनुसार

महुआ मेवा, बेर कलेवा, गुलगुच बड़ी मिठाई।
जो इतने चाहनों हो, तो करो गुड़ाने सगाई।।

कहने का अर्थ महुआ यहां का मेवा है, बेर से कलेवा अर्थात नाश्ता किया जाए और गुलगुच यहां की मिठाई है। अगर इतने से आपका परिवार या आपकी बेटी का जीवन पोषण हो सकता हो, तो यहां पर उसकी सगाई की जाए।

वर्षा बहुत कम होती है। सूखा, दुर्भिक्ष, बहुवृष्टि के कारण दुर्भिक्ष, अन्ना प्रथा के कारण जीवन कष्टमय है। फिर भी परिवार प्राकृतिक उपहार से भरण पोषण कर ही लेता है। यहां जो भी आया लूट कर ले गया।

इन्द्र करौटा लै गये, मघा बान्ध गये टेक।।
बेर करौन्दा जै कहें, मरन न दैहे एक।।

बुन्देलखण्ड की पहचान, आर्थिक पहचान और सांस्कृतिक पहचान

बुन्देलखण्ड के रीति–रिवाज, धार्मिक उत्सव और परम्पराएं सम्पूर्ण भारतवर्ष से काफी हद तक भिन्न है। ब्रह्मा विष्णु महेश व गणेश की प्रकृति पूजन व प्रकृति की पूजा होती है। यहां पर कन्या को देवी का अवतार माना जाता है, इसके चरण स्पर्श किए जाते हैं और उसके ससुराल का भोजन और पानी भी नहीं ग्रहण करते। प्रकृति के रूप में बरगद, पीपल, तुलसी, इमली, महुआ आदि वृक्षों की भरपूर पूजा होती है। सर्प, गाय, मोर, गौरैया आदि पक्षियों की पूजा होती है और परम पूज्य हैं। ब्राह्मण अति पूजनीय है। इतना होते हुए भी यह आपराधिक क्षेत्र है। मौका आने पर लोग भीषण अपराध करते हैं और अपराधी रहे है। सर्वाधिक डकैतों की सन्ख्या बुन्देलखण्ड में ही है/थी।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी इस क्षेत्र की आलोचना अपराध स्थिति को देखते हुए ही की हैः–

द्वितीय सोपान, अयोध्याकाण्ड। पृष्ठ 607 चौ०–
तुम्ह प्रिय पाहुन बन पग धारे।
सेवा जोग न भाग हमारे।।

आर्थिक संरचना **Economic Structure**

देव काह हम तुम्हहिँ गोसाँई।
ईधन पात किरात मिताई।।1।।

आप प्यारे मेहमान वन में आये हैं, सेवा के योग्य हमारे भाग्य ही नहीं हैं। हे स्वामिन हम आप को क्या देंगे? किरातों की मित्रता लकड़ी और पत्तों की है।।1।।

यह हमारि अति बड़ि सेवकाई।
लेहिं न बासन बसन चोराई।
हम जड़–जीव जीव–गन–घाती।
कुटिल कुचाली कुमति कुजाती।।2।।

हमारी यही बहुत बड़ी सेवकाई है कि आप के बर्तन और कपड़े न चुरा लेवें। हम सब जड़–जीव हैं, जीवो की, भोजन हेतु, हत्या करनेवाले, कुटिल, कुचाली, कुबुद्धी और नीच जाति है।

पाप करत निसि–बासर जाहीँ।
नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं।।
सपनेहुँ धरम–बुद्धि कस काऊ।
यह रघुनन्दन–दरस प्रभाऊ।।3।।

श्रम जिसे कथित सभ्य समाज पाप ही कह सकता है, करते रात–दिन बीतते हैं, फिर भी पेट भर भोजन नहीं पाते हैं। कमर में वस्त्र नहीं और इतने गरीबों से राजा व भगवान राम क्या चाहते थे।

तुलसी दास जी ने भी अपरोक्ष रुप से भगवान की विवशता दिखाई है कि भगवान व राजा के राज्य में प्रजा इतनी विवश भी हो सकती है। आदिवासी लोगों को अशिक्षित रखने व आर्थिक रुप से पिछड़ा रखने में राजा का कोई तो उद्देश्य होगा।

अपराध स्थिति गरीबी के कारण उपजी है।

इसके अलावा लूटपाट, लूटने की कविताओं में काफी कुछ लिखा गया है:–

बैरागिया नाला जुल्म जोर,
जहां साधु वेश में रहत चोर।
जब तबला बाजे धीन–धीन,
तब एक–एक पै तीन–तीन।।

कहने का मतलब कि साधु वेश में भी यहां किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता और वह चोर डकैत भी हो सकता है और होता रहा है। आर्थिक रुप से पिछड़ा रखने में कोई कारण किसी ने क्यों नही खोजा?

स्त्रियों की जनसन्ख्या कम होने के कारण यहां के लोग चरित्रहीन भी हैं, ऐसा कहा जा सकता है।

विन्ध्य के वासी, उदासी सदा, बिन नारी दुखारे।

जहां बुन्देलखण्ड एक नई सन्स्कृति को जन्म देता है, वहीं दूसरी ओर अपराध के लिए, आर्थिक रुप से पिछडे सन्साधनों को देखते हुए, पृष्ठभूमि तैयार करता है। इसलिए यहां आने वाला कोई यात्री सुरक्षित नहीं है। इसका कारण यहां का किसी भी दृष्टि से विकास न होना है। जो आज 2021में भी देखा जा सकता है। बान्दा को तो सदैव ही पिछड़ा माना गया, देखा गया और इसका कभी उत्थान नहीं किया गया। जो जनसन्ख्या 1900ई में में थी वही जनसन्ख्या लगभग आज भी 2011 में है, 1,11,000 लगभग।